हम सभी जानते हैं कि श्रीकृष्ण वृंदावन की गोपियों से प्यार करते थे, और गोपियां उनसे प्यार करती थीं। एक ईश्वर के सभी आत्माओं के साथ रिश्ते स्वाभाविक है क्योंकि एक भगवान अनंत आत्माओं के लिए अनंत रूप धारण कर सकता है। श्रीकृष्ण ने राधा समेत सभी गोपियों को छोड़ दिया और द्वारिका गए और सोलह हजार एक सौ आठ लड़कियों के साथ विवाह किया जो उनके द्वारा राक्षस के चंगुल से बचायी गयी थी। श्रीकृष्ण पूर्ण ऐषोआराम का जीवन जीते था, जबकि गोपियां गांव में साधारण जीवन जी रही थीं, श्रीकृष्ण की वापसी की प्रतीक्षा कर रही थीं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

द्वारिका में, श्रीकृष्ण ने एक बार अभिनय किया था कि उन्हें गंभीर सिरदर्द हो रहा था। सभी डॉक्टर विफल हो गए। सभी रानीयाँ बेहद चिंतित थी। नारदजी, जो उनके भक्त में से एक थे, उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा, 'यह सिरदर्द आपकी करतूत है। केवल आप हमें इसका इलाज बता सकते हैं। '

श्रीकृष्ण मुस्कुराये और कहा,'अगर मुझे अपने सिर पर लगाने के लिए मेरे भक्त के पैरों (चरण-धूल) से धूल के कण मिलते हैं, तो मैं जल्द ही ठीक हो जाऊंगा। '

नारदजी ने सोचा, 'मैं भी तो एक भक्त हूं। लेकिन मैं इस गड़बड़ी में नहीं पडना चाहता क्योंकि एक बार मुझे बंदर का चेहरा दिया गया था। नहीं जानते कि श्रीकृष्ण के मन में क्या हैं! '

नारदजी तब रानीयों में पास गये क्योंकि किसी भी भौतिक व्यक्तित्वों को भगवान की रानी की सीट नहीं मिल सकती। वो सभी रानीयां महान संत थी। रानीयों ने जवाब दिया, श्रीकृष्ण हमारे पति हैं और शास्त्रों के अनुसार पति को चरण धूल पेश करना सबसे बड़ा पाप

है।'।
नारदजी ने कई भक्तों से चरण-धूल पाने का प्रयास किया लेकिन उनमें से सभी ने इनकार कर दिया। उसके बाद वे श्रीकृष्ण के पास वापस गये। श्रीकृष्ण ने कहा, 'आपको इस जगह में मेरी दवा नहीं मिलेगी। इसे वृंदावन में आज़माएं।'
नारदजी वृंदावन गए और वृंदावन की गोपियों को बताया, 'श्रीकृष्ण ठीक नहीं है। उनको गंभीर सिरदर्द है।
'

सभी गोपियां चिंतित हो गयी। नारदजी ने आगे कहा, 'यदि आप अपने पैरों को धूल दे सकती हैं, तो वह तेजी से ठीक हो जाऐंगे।' सभी गोपियों ने अपने पैर फैला दिये और कहा की चाहे जितनी चरण-धूल ले जाइये।
नारदजी ने पूछा, 'क्या आप परमेश्वर को पैर की धूल देने की पेशकश के नतीजे जानती हैं? नरक जाना पडता है।'
गोपियों ने कहा,' तेजी से जाओ। श्रीकृष्ण परेशानी में हैं। पहले उनको चरण-धूल दे आओ। बाद में ये व्याख्यान दो।'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह प्यार है जिसे निस्वार्थ प्यार कहा जाता है। प्रेमी अपनी कार्रवाई के नतीजे के बारे में चिंतित नहीं है जब तक कि उसके कार्य ईश्वर को खुश कर रहे हो। इस प्रकार प्यार निष्काम होना चाहिए। निष्काम प्रेमी नरक यातना से भी किसी भी राहत की भी मांग नहीं करता।